सामुदायिक रेडियो है भारत की आत्मा - डॉ. जितेंद्र सिंह

'राष्ट्र उत्थान में सामुदायिक रेडियो की भूमिका' विषय पर हुआ राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

दिल्ली/एनसीआर, 17 मार्च, 2016 : रेडियो की पहुंच असीमित है। सामुदायिक रेडियो भारत की आत्मा है। जहां कोई अन्य संचार माध्यम नहीं है वहां रेडियो ही एकमात्र संचार माध्यम है। यह बात डॉ. जितेंद्र सिंह, राज्य मंत्री, भारत सरकार ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय एवं फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में कही। उन्होंने कहा कि अब भी देश की लगभग 15,000 पंचायतों में आप्टिकल फाईबर नहीं है। जिस कारण आज भी इन पंचायतों में सूचना पहुंचाने और मनोरंजन का एकमात्र उपकरण रेडियो ही है। सामुदायिक रेडियो एक शक्तिशाली संचार माध्यम हो सकता है, इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का उदाहरण दिया। 'राष्ट्र उत्थान में सामुदायिक रेडियो की भूमिका' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में एनआईओएस के चेयरमेन प्रो सी.बी. शर्मा ने कहा कि रेडियो घर-घर तक शिक्षा की अलख जगा सकता है। रेडियो एक ऐसा माध्यम है जो विकास योजनाओं को आमजन तक पहुंचा सकता है। उनका कहना था कि एनआईओएस के वेब रेडियो से तीस लाख विद्यार्थी जुडे हुए है। उन्होंने कहा कि एनआईओएस के पास 6,000 घंटे की रेडियो सामग्री है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वृज किशोर कुठियाला ने कहा कि कम्यूनिटी रेडियो में असीम ताकत है। सामुदायिक रेडियो समाज को जोडता है। उनका कहना था कि कम्यूनिटी रेडियो मीडिया में लोकतंत्र का प्रतीक है। जो समाज का उद्धार कर सकता है। उन्होंने कहा कि कम्यूनिटी रेडियो पर जिम्मेदारी है, वह कम्युनिटी को मुख्यधारा के समाज से जोड़े। उद्घाटन सत्र को विशिष्ठ अतिथि संतोष अहलावत (सांसद, झुंझुनु) एवं कमल पटेल (पूर्व राजस्व मंत्री, मध्य प्रदेश) ने भी संबोधित किया। प्रथम सत्र का संचालन रमेश कुमार हांगलु और रजनी नागपाल ने किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र का विषय 'समरस भारत एवं सामुदायिक रेडियो' रहा। जिसके मुख्य वक्ता सी.एल. कटारिया (निदेशक, कपार्ट) ने कहा कि कम्यूनिटी रेडियो में ही वह ताक़त है जो सामाजिक मूल्यों को संवर्धित कर सकता है। उन्होंने कहा कि रेडियो ही वह माध्यम है जिसमें कल्पना साथ-साथ में चलती है। उन्होंने कहा कि सामाजिक मुद्दों पर लिखे लोक गीतों आदि को भी प्रसारित करना चाहिए। सत्र के दौरान लोकेश शर्मा, वनस्थली विद्यापीठ कम्युनिटी रेडियो ने अपने अनुभव साझा किए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. गीरजा

शंकर शर्मा ने कहा कि कम्युनिटी रेडियो संगठन फेडरेशन की शुरुआत बढ़े ही संघर्षपूर्ण तरीके से हुई है, लेकिन इसकी शक्ति बहुत अधिक है। सत्र का संचालन डॉ. मोनिका वर्मा ने किया।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र में 'सामुदायिक रेडियो के माध्यम से स्वच्छ भारत का निर्माण' विषय पर चर्चा की गई। समापन सत्र का विषय 'सामुदायिक रेडियो और भविष्य का परिदृश्य' रहा। सत्र के मुख्य वक्ता मनमोहन वैद्य, राष्ट्रीय प्रचार प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने कहा कि मुख्यधारा की मीडिया सिर्फ शहरों तक सीमित हो गया है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो की जिम्मेवारी बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि कम्युनिटी रेडियो लोगों में शिक्षित करने के साथ ही कई और क्षमताएं भी हैं। जिसे आज समझने की जरुरत है। कम्युनिटी रेडियो ही है जो भारत के अतीत से सबको परिचित करवा सकता है। उनका कहना था कि सामुदायिक रेडियो ही 'भारत को मानो, भारत को जानो, भारत के बनो और भारत को बनाओ' की अवधारण को जन-जन तक पहुंचा सकता है। सामाजिक सद्भाव और सौहार्द को बनाए रखने में भी सामुदायिक रेडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। अध्यक्षता करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वृज किशोर कुठियाला ने कहा कि सामुदायिक रेडियो का उद्देश्य सामाजिक होता है, जिसके लिए जरुरी है कि कम्युनिटी रेडियो सामाजिक योगदान से ही चलें। उसकी योजनाओं का निर्माण सरकारी वित्त की उम्मीद से न किया जाए। जिससे कोई भी योजना कभी न तो रुके ही और न ही अधुरी रहे। सत्र को लोकसभा सांसद उदितराज ने भी संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. डीपी सिंह ने किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। सेमिनार में डॉ. अरुण कुमार भगत, रजनी नागपाल, लालबहादुर ओझा, राकेश योगी, रमेश कुमार हंगलु, रणजीत सिंह, वृजेंद्र वर्मा, रामशंकर पाल, शिवदत्त शर्मा, यशवंत पाटिल, अभिजात कांडपाल, अंजना शर्मा, रजनी मुद्गल, निक्की तिवारी, रीचा चांदी, कादिम्बिनी, अभिलाषा सहित कई प्रतिभागी उपस्थित रहे।